

रहमत कर माँ

दर दर की माँ खा के ठोकर तेरे दर पर आई हूँ,
रहमत कर माँ चरणों में रख ले जग की मैं तुकराई हूँ.....

कौन है अपना जग में मईया किसको मैं अपना कहूँ,
कोई नहीं अब मेरी सुनता किसको दिल का दर्द कहूँ,
बेदर्दी इस जग से मईया हार तेरे दर आई हूँ,
दर दर की माँ खा के ठोकर तेरे दर पर आई हूँ....

दुनिया के भव सागर में माँ सबने मुझको छोड़ दिया,
दिया ना साथ किसी ने मेरा सबने ही मुख मोड़ लिया,
राह अँधेरी देख के मईया मैं तो बड़ी घबराई हूँ,
दर दर की माँ खा के ठोकर तेरे दर पर आई हूँ....

तोड़ के सारे जग के बंधन तुझसे आस लगाई है,
दिल मेरा कहता मुझसे मईया होनी मेरी सुनवाई है,
और ना कुछ भी मांगू तुझसे बस एक अर्ज़ी लाइ हूँ,
दर दर की माँ खा के ठोकर तेरे दर पर आई हूँ....

मतलब के सब साथी हैं माँ कोई ना मेरा अपना है,
अपनों ने ही गैर बना कर तोडा हर एक सपना है,
किस से कहूँ मैं अपना जग में सबके लिए तो पराई होऊँ,
दर दर की माँ खा के ठोकर तेरे दर पर आई हूँ.....

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/26781/title/rehmat-kar-maa>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |